

पद १८३

(राग: पिलु जिल्हा - ताल: धुमाळी)

वाहद जात पाक है अल्ला। हर शय जल्वे नूर हुवल्ला। बोलो
लाइलाह इल्लिला। खुद आशिक खुद माशूक इश्क दीवाना। हर
शक्ल बना मस्ताना ॥१॥ दरिया इश्क जोश लहराया। आशिक
मस्त अनलहक् गाया। हुबाब दरिया ही मे समाया। आजाद खुदा
आबाद किया मैखाना। मसजिदो दैर बुतखाना ॥२॥ आदम
अक्स नूर है रब का। हरदम सबूत उस कुदरतका। खाली सब

झगडा मन (मैं) तू का। वही मालिक खालिक पीर ख्वाजा और
बंदा ॥३॥ समझो वजूद काबेबैतुल्ला। हर दिल महल मुबारक
अल्ला। पीवे कामिल मुरशद प्याला। कुलफना बाकी रब मानिक
बंदा साचा। बस करो सबक दीबाचा ॥४॥